

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library
S.D.P.B.

Coll. No. 122.

Title VI'SVADEVA.

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No. : 122 Subject : Vedic

Title : Vignadeva

Author : — Scribe : ^{Dev} Jany Krishna Jany Singh

Date of the work : — Date of the Ms. : 1964

Place of the work : — Place of the Ms. : —

Size : 9-2" by 5-3" Extent : 2 full

Language : Sanskrit Script : Devanagari

Remarks : Complete

अथ चेन्न्योनमः॥ वयोन्योनमः॥ अपसव्यं॥ यक्षौतत्रे॥ सव्यं॥ आचमनं॥ इ
 तिवैश्वदेवसमाप्तं॥ ॥ संवत् १९५८ नावर्षे आश्विन शुद्धि आठ मे निशि
 तं॥ सप्तम्यारवि वारे च जन्म हृदिवसे तथा॥ एते निषिद्धं सति तत्तर्पणं त
 दहित वेत्॥ उशि वाय॥ अनु न वत्तु॥ ॥ इवे देव श्रद्धा देव शिवरां मे नानि
 रितं॥ पत्र वै वैश्वदेवनां॥ ॥ श्री॥ क॥ क॥ श्री॥ श्री॥

वैश्वानरस्य सुमताम्या मृगनाहिकं बुबना नारम निश्रीगद तो जातो विश्वं निदं वि चष्टे वैश्वानरो यत ते त्वयै ला पृष्टो दि विष्टो अग्निः शुचि ग्राष्ट
 यो विश्वो अघो पीता विवेरो॥ वैश्वानरः सह प्रापृष्टो अग्निः स नो दि वासरि षः पातु नक्तं॥ वैश्वानर तव तस्य मत्स्य स्मात्ता यो मघवानः सवतां त
 नो॥